कल्कि, वासुकि एवं नरसिंह पुराणों में शिवतत्त्व

कल्कि उपपुराण में छः हजार एक सौ श्लोक (कल्कि पुराण 3/21/28) हैं। परन्तु वर्तमान में इतने श्लोक प्राप्त नहीं होते। इसलिये कुछ लोगों के मत से यह पुराण संपूर्ण नहीं है। आजकल लगभग 1350 श्लोक ही प्राप्त होते हैं। इसके तीन अंश हैं। प्रथम एवं द्वितीय अंश में सात-सात तथा तृतीय अंश में 21 अध्याय हैं। इस उप-पुराण में विष्णु के भावी कल्कि अवतार के चरित्र का वर्णन है। इसमें विष्णु की महिमा का विशेष कथन किया गया है। इसमें भगवान शिव संबंधी बहुत ही कम सन्दर्भ पाये जाते हैं।

वासुकि पुराण, विद्वानों की राय में, न तो महापुराण है और न ही उप पुराणों की गणना में आता है। यह नीलमत या एकाम्र जैसे लौकिक या स्थानीय पुराणों की कोटि में आ सकता है। यह पुराण किसी अन्य पुराण का हिस्सा मात्र लगता है। इस पुराण के अन्त में लिखा है-

"इति श्री भुवनकोशवर्णनोद्योते काश्मीरखण्डे भद्राश्रमे वासुकिस्थानवर्णनं नाम नवतितमः पटलः।"

उपरोक्त उद्धरण से स्पष्ट हो जाता है कि (किसी अज्ञात पुराण का) वासुकिस्थानवर्णन नामक नौवाँ पटल ही वासुकि पुराण है। इस पुराण में आजकल कुल 503 श्लोक पाये जाते हैं। इस पुराण के प्रमुख वक्ता भगवान् शिव एवं श्रोता पार्वती देवी हैं। इस पुराण में भगवान् शिव की प्रधानता का वर्णन है।

भविष्य (III/3/28/10-14) और एकाम्र (1/18-20) पुराणों के अन्तर्गत नरसिंह पुराण को महापुराण के रूप में तथा कूर्म, गरुड, मत्स्य, पद्म, स्कन्द, देवीभागवत और बृहद्धर्म पुराणों में उप-पुराण के रूप में स्वीकार किया गया है। इसमें 68 अध्याय हैं। इस पुराण में मुख्यतः विष्णु अवतार नृसिंह की महत्ता का प्रतिपादन हुआ है। इस पुराण में भी भगवान् शिव संबंधी प्रसंग लगभग नगण्य हैं।

भगवान् शिव का स्वरूप

अपने गुरु परशुरामजी से प्रेरित हो भगवान् कल्कि ने शिवजी से अस्त्र-शस्त्रादि की प्राप्ति हेतु बिल्वोदकेश्वर नामक महादेवजी के पास जाकर उन्हें संतुष्ट करने के लिये स्तुति की। अपनी स्तुति में वे भगवान् शिव को संसार के स्वामी, सभी प्राणियों में विराजमान, वासुकि नाग को कण्ठ में धारण करनेवाले, पंचवदन, त्रिलोचन, आदिदेव, आनंद के धाम, योग के अधिपति, कामनाओं का नाश करनेवाले, शिरपर गंगाजी को धारण करनेवाले, जटा-जूट धारण करनेवाले, महाकाल, माथेपर चन्द्रमा को धारण करनेवाले, खंग और शूल आदि शस्त्रों को धारण करनेवाले, संसार को प्रलय के समय भस्म करनेवाले, पंचभूत एवं तन्मात्रास्वरूप, काल, कर्म एवं स्वभावानुसार जगत्-प्रपंच की सृष्टि करनेवाले, जगत् के पालनार्थ विष्णुरूप धारण करनेवाले तथा परम देवता कहते हैं। (कल्कि पुराण/प्रथमांश/3/14-20)

यो भूतादिः पञ्चभूतैः सिसृक्षुस्तन्मात्रात्मा काल कर्म्मस्वभावैः।
प्रहृत्येदं प्राप्य जीवत्वमीशो ब्रह्मानन्दो रमते तं नमामि।।
स्थितौ विष्णुः सर्व्वजिष्णुः सुरात्मा लोकान् साधून् धर्म्मसेतून् बिभर्ति।
ब्रह्माद्यांशे योऽभिमानी।
गुणात्मा शब्दाद्यङ्गैस्तं परेशं नमामि।।
यस्याज्ञया वायवो वान्ति लोके ज्वलत्यग्निः सविता याति तप्यन्।
शीतांशुः खे तारकैः सग्रहैश्च प्रवर्त्तते।
तं परेशं प्रपद्ये।।
यस्याश्वासात् सर्व्वधात्री धरित्री देवो वर्षत्यम्बु कालः प्रमाता।
मेरुर्मध्येभुवनानाञ्च भर्त्ता तमीशानं विश्वरूपं नमामि।।

(कल्कि पु. 1/3/17-20)

अर्थात्-तुम पंचभूत एवं तन्मात्रास्वरूप होकर काल, कर्म एवं स्वभाव के अनुसार(प्रपंच की) सृष्टि करते हो। अन्त में इन सबका हरण करके तुम जीवत्व को प्राप्त हो ब्रह्मानंद का भोग करते हो, तुमको नमस्कार करता हूँ। तुम जगत् के पालन के लिये सर्व जिष्णु विष्णुरूप धारण करके, धर्म के सेतुस्वरूप साधुओं की रक्षा करते हो। तुम सगुण होकर आकाशादि अवयव से ब्रह्मादि के अंशाभिमानी होते हो। तुम परम देवता हो। तुमको नमस्कार करता हूँ। तुम्हारी आज्ञा से संसार में वायु प्रवाहित हो रही है, अग्नि प्रज्वलित हो रही है, सूर्य देव ताप देते हुए भ्रमण कर रहे हैं, तुम्हारी आज्ञा से आकाश में नक्षत्र एवं चन्द्रमा उदय होते हैं। तुम परम देवता हो। तुम्हारा आश्रय ग्रहण करता हूँ। तुम्हारी आज्ञा से पृथ्वी सर्वधात्री होकर सबको वहन करती है; जिस समय आवश्यकता होती है, उसी समय देव जल वर्षाता है; समस्त भुवन के मध्य में स्थितहोकर सुमेरुपर्वत पृथ्वी को धारण करता है। तुम विश्वरूप हो, हे ईशान! तुमको नमस्कार है।

ऊपर के सन्दर्भों को देखने से भगवान् शिव के निर्गुण एवं सगुण दोनों रूपों की झलक मिलती है। भगवान् शिव को महेश्वर, कल्याणमय तथा आशुतोष भी कहा गया है।(कल्कि पु. 1/3/13)

वासुकि भगवान् शिव की स्तुति करते हुए उन्हें महादेव, कैलासपर्वतवासी, जटा-मुकुट से शोभित, भगवान्, देवताओं द्वारा पूजित, महेशान, अज्ञान का भेदन करनेवाले, भूत-भावन, देवदेवेश, त्रैलोक्येश, सृष्टिसंहारक, सत्य एवं धर्मस्वरूप, लोकेश्वर, प्रभु, देवताओं के आचार्य, परमात्मा, योगियों के ईश्वर, महाप्रभु, अर्द्धचन्द्र को धारणकरनेवाले तथा कण्ठ में सर्प का हार पहननेवाले इत्यादि कहा है। (वासुकि पुराण /174-180)

त्रैलोक्येश! नमस्तेऽस्तु सृष्टिसंहारकारक।
त्वं धर्मस्त्वं च वै सत्यं त्वं वै लोकेश्वरः प्रभुः।।

सुराचार्य! नमस्तेऽस्तु त्रिदशेश्वर।
परमात्ममहायोगिन्योगीश्वर! महाप्रभो।। (वासुकि पुराण/178-179)

अर्थात्-हे तीनों लोकों के स्वामी! तुम सृष्टि के संहारक, धर्म एवं सत्यस्वरूप, लोकों के ईश्वर तथा प्रभु हो, तुम्हें नमस्कार है। हे देवताओं के आचार्य! हे योगीश्वर! तुम परमात्मा, महायोगी, महाप्रभु तथा सभी देवों के स्वामी को नमस्कार है।

(अनन्त मुनि के पिता)विद्रुम अपने पुत्र की नपुन्सकता को दूर करने के लिये शिववन(हरिद्वार के पास) में जाकर धूप, दीप, चन्दनादि से विधिपूर्वक महादेवजी की पूजा-स्तुति करने लगे। वे अपनी स्तुति में भगवान् शिव को मंगलदायक, शान्त, समस्त प्रणियों के आश्रय, सभी लोकों के स्वामी तथा आनंद का भोग करानेवाला जटा-जूट, गंगा एवं वासुकी को धारण करनेवाला आदि-आदि कहा है।(कल्कि पु. 2/4/18)

शिवं शान्तं सर्व्वलोकैकनाथं भूतावासं वासुकीकण्ठभूषणम्।
जटाजूटबद्धगङ्गातरङ्गवन्दे सान्द्रानन्दसन्दोहदक्षम्।।

(कल्कि पु. 2/4/18)

वासुकि एवं कल्कि दोनों पुराणों के उपरोक्त सन्दर्भ भगवान् शिव को परमतत्त्व सिद्ध करते हैं। वे ही सगुण एवं निर्गुण दोनों रूपों में अवस्थित हैं। सगुणरूप धारणकर वे प्राणियों के काल एवं कर्मादि के अनुसार सृष्टि की रचना करते, पालन करते एवं अन्त में सबका संहार करते हैं। वे ही ब्रह्मा एवं विष्णु का रूप धारण करते हैं। वे ही तीनों लोकों के स्वामी तथा देवताओं के भी गुरु हैं।

शिवोपासना

भगवान् शिव को शीघ्र प्रसन्न होनेवाले अर्थात् आशुतोष(कल्कि पु. 1/3/13), कामनाओं या वासनाओं का नाश करनेवाले(कल्कि पु. 1/3/15), साधु पुरुषों की रक्षा करनेवाले(कल्कि पु. 1/3/18), (मुक्ति प्रदायक)गंगा को धारण करनेवाले(कल्कि पु. 1/3/15), देवताओं द्वारा पूजित (वासुकि पु./175), अज्ञान का नाश करनेवाले(वासुकि पु./176), सत्य एवं धर्मस्वरूप(वासुकि पु./178), देवताओं के गुरु तथा योगियों के ईश्वर(वासुकि पु./179) तथा मोक्ष प्रदान करनेवाले (नरसिंह पु. 63/17) आदि कहा गया है। इतना ही नहीं भगवान् कल्कि को शिवोपासना से शीघ्रगामी तथा नाना रूप धारण करनेवाला गारुड अश्व, सर्वज्ञ तोता तथा महाप्रभावाली खंग, जिसके बलपर पृथ्वी के भार को हल्का किया जा सकता है, तथा अन्य वरदान प्राप्त हुआ(कल्कि पु. 1/3/9, 25-27), पद्मावती को कल्कि का पति के रूप में प्राप्त होने का वरदान प्राप्त हुआ(कल्कि पु. 1/4/37-40, 44), नागराज वासुकि को भगवान् शिव से उनके सान्निध्य का वरदान प्राप्त हुआ(वासुकि पु./181-182 आदि) तथा भगवान् राम ने शिवोपासना से शिव की परम भक्ति का वरदान पाया(नृसिंह पु. 52/122)। इन्द्र ने मुक्ति की कामना से कैलास पर जाकर शिव की

आराधना की(नृसिंह पु. 63/17)। अनन्त मुनि के पिता विद्रुम ने उनकी नपुन्सकता को शिवोपासना के द्वारा ही दूर किया(कल्कि पु. 2/4/20)।

भगवान् शिव की उपरोक्त विशेषताओं को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि शिवोपासना से व्यक्ति आसानी से भोग एवं मोक्ष प्राप्त कर सकता है। इसी कारण से कल्कि एवं राम जैसे अवतारी पुरुषों ने भी भगवान् शिव की उपासना की है।

एक बार इन्द्र ने विषय-भोगों की निरर्थकता को विचार किंकिणियों से युक्त अपने विमान पर चढ़ कर मुक्ति की कामना से भगवान् शिव की आराधना हेतु कैलास की ओर प्रस्थान किया था।

विमृश्य चैतत् स सुराधिनाथो विमानमारुह्य सकिङ्किणीकम्।
नूनं हराराधनकारणेन कैलासमभ्येति विमुक्तिकामः।।

(श्रीनरसिंह पुराणम् 63/17)

भगवान् शिव की सगुण उपासना मुख्यतः लिंगोपासना ही है। रावणविजय के उपरान्त अयोध्या की ओर लौटते हुए श्रीराम ने सेतु के मध्य भगवान् शिव की स्थापना की तथा उनकी कृपा से श्रीराम ने उनकी भक्ति को प्राप्त किया। तभी से भगवान् शिव वहाँ रामेश्वर नाम से पूजे जाते हैं। भाग्यवान् पुरुष को उनके दर्शन से सभी प्रकार की हत्याओं के पाप से मुक्ति मिल जाती है।

प्रतिष्ठाय महादेवं सेतुमध्ये स राघवः।।
लब्धवान् परमां भक्तिं शिवे शम्भोरनुग्रहात्।
रामेश्वर इति ख्यातो महादेवः पिनाकधृक।।
तस्य दर्शनमात्रेण सर्वहत्यां व्यपोहति। (श्रीनरसिंह पु. 52/121-123)

वासुकि पुराण में अनेक शैव-तीर्थों का उल्लेख मिलता है। इनमें से कुछ का उल्लेख यहाँ किया जायगा। केदारतीर्थ के बारे में कहा गया है कि वह महापातकों का नाश करनेवाला है। श्रावण मास के शुक्लपक्ष की चतुर्दशी या पूर्णमासी को जो कोई भी वहाँ स्नान करता है वह जन्म-मरण के चक्र से छूट जाता है तथा पितृपक्ष, मातृपक्ष तथा बन्धुपक्ष के सभी लोगों को तारकर शिव-सायुज्यता को प्राप्त कर लेता है।(वासुकि पु./126-129)

केदारं नाम तत्तीर्थं महापातकनाशनम्।
तत्र स्नात्वा नरो विद्वान्न भूयो जनिमाप्नुयात्।।
श्रावणे मासे सम्प्राप्ते शुक्लपक्षे चतुर्दशी।
ऋक्ष श्रवणसंयुक्ता पूर्णिमायां विशेषतः।।
यः कश्चित्स्नाय्यते तत्र न भूयो भुवि जायते।
पितृपक्षं मातृपक्षं बन्धुपक्षमथापि वा।।
उत्तार्य परमेशानि शिव सायुज्यतां व्रजेत्। (वासुकि पु./126-129)

वासुकि को भगवान् शिव ने प्रसन्न होकर वरदान दिया था कि जहाँ-जहाँ उसके स्थान हैं वहाँ-वहाँ वे (भगवान्) भी निवास करेंगे। वासुकि के निवास के पाँच मुख्य स्थान विन्ध्यशैल के मध्य स्थित कलिंगविषयतीर्थ, हिमालय में स्थित केदारतीर्थ, चित्रकूटतीर्थ, वितस्तासिंधुसंगमतीर्थ तथा भद्रावकाशतीर्थ हैं। इन सभी स्थानों पर वरदान के कारण भगवान् शिव भी सदा निवास करते हैं। अतः इन तीर्थों का महान् फल है। (वासुकि पु./184-185)

वासुकि के तीर्थों के दर्शन, विधिवत् पूजा, स्नान तथा परिक्रमा आदि से व्यक्ति 101 पीढ़ियों को तार देता है तथा उसके पितर स्वर्ग को चले जाते हैं। वह स्वयं भोग-मोक्ष को प्राप्तकर सभी पापों से विशुद्ध हो रुद्रलोक को चला जाता है। (वासुकि पु./205-209)

.....

पितरः स्वर्गमायान्ति भोगमोक्षौ स्वयं लभेत्।
सर्वपापविशुद्धात्मा रुद्रलोकं च गच्छति।। (वासुकि पु./209)

भाद्रपद में चतुर्दशी के दिन वासुकितीर्थ में विधिपूर्वक स्नान करने से व्यक्ति सभी पापों से छूटकर शिवलोक को जाता है। (वासुकि पु./263-264)

रुद्रपुरीतीर्थ में भगवान् शिव सदा विराजमान रहते हैं। इस तीर्थ में नाना प्रकार के भक्त शिवोपासना में रत रहते हैं। कोई लिंगपूजा में रत रहता है तो कोई स्तोत्रों से शिवाराधन में। वेदान्ती लोग शम-दम आदि षडांगों का पालन करते हैं। वहाँ पर कोई हवन तो कोई ध्यानपरायण तो कोई जपपरायण है। नाना प्रकार से लोग वहाँ भगवान् शिव की आराधना करते हैं। (वासुकि पु./311-321)

आषाढ़ के शुक्लपक्ष की दशमी को वासुकिकुण्ड पर पिण्डदान करने से महान् पुण्य होता है तथा पितृ लोगों का त्राण हो जाता है। तर्पण के बाद महादेव की विधिपूर्वक पूजा से व्यक्ति सभी पापों से छूटकर शिवसायुज्यता को प्राप्त होता है। (वासुकि पु./329-331)

गुह्येश्वर गुहा-स्थानतीर्थ के ईश्वर सदाशिव हैं। वहाँ पर मुनिगण, सिद्धगण, गन्धर्वगण, देवगण, किन्नर, इन्द्रादि लोकपाल तथा अन्य स्वर्गवासी लोग गुह्येश्वर महादेव की सेवा-पूजा में सदैव लगे रहते हैं। गुह्येश्वर महादेव सभी प्रकार के पापों का नाश करनेवाले हैं। उनकी पूजा से व्यक्ति निष्पाप हो जाता है। वहाँ शिव की पूजा से बाल्य एवं युवा अवस्था कृत पापों, वाणी, कर्म एवं मानसकृत पापों, अगम्यागमन, मित्रद्रोह आदि जनित पापों से छुटकारा हो जाता है। (वासुकि पु./388-395)

तस्माद्-गुह्येश्वरो देव! सर्वपापप्रणाशकः।।
सम्पूज्य परमेशनि! नरो विगतकल्मषः।
वाल्ये यद्वा कृतं पापं यौवने चापि यत्कृतम्।।
वाचाकृतं कर्मणा वा मनसा यच्च चिन्तितम्।
अगम्यागमनं चैव मित्रद्रोहमथापि वा।।

.....।

सर्व नाशयते पापं ईश्वरः परिपूजितः।। (वासुकि पु./392-395)

स्थानेश्वरतीर्थ सभी प्रकार के पापों से मुक्ति दिलानेवाला है। वहाँ स्नान कर देवताओं और पितरों का तर्पण करने से व्यक्ति अपने सात पीढ़ियों का उद्धार कर देता है। एक बार स्नान कर लेने से दस जन्म के पापों से छुटकारा हो जाता है। वहाँ के सात तीर्थ गया के समान फलदायी हैं। वहाँ स्नान एवं शुद्ध मन से विधिवत् भक्ति करने से व्यक्ति शिवसायुज्यता को प्राप्त कर लेता है।(वासुकि पु./408-414)

बालखिल्यैश्वरतीर्थ में बालखिल्यों द्वारा पूजित लिंग की उपासना से सिद्धि प्राप्त होकर 21 पीढ़ियों को नरक से छुटकारा मिल जाता है। (वासुकि पु./466-468)

वासयोग्या-अरणीतीर्थ पर नदी के किनारे आठ लिंग प्रतिष्ठित हैं। वहाँ स्नान एवं पूजा से व्यक्ति को भोग एवं मोक्ष प्राप्त होता है। (वासुकि पु./482-484)

नीरु एवं चन्द्रायणी संगम पर एकादश रुद्र सदा निवास करते हैं। वहाँपर जलरूप में साक्षात् सदाशिव विराजते हैं। वहाँ भाद्रपद के कृष्णपक्ष में, विशेषकर अमावस्या को स्नान कर देवता एवं पितरों का तर्पण कर जप-होमादि करना चाहिये। तदनन्तर दान तथा विप्र-पूजा इत्यादि करने से अनन्त फल प्राप्त होता है। वह अपने पितरों को तार देता है। गया में पिण्डदान का जो फल होता है, वह उसे प्राप्त हो जाता है। कुलों का उद्धार कर वह स्वर्गगामी होता है तथा जबतक ब्रह्मा, विष्णु एवं रुद्र बने रहते हैं तबतक वह पितरों के साथ रुद्रलोक में आनंद प्राप्त करता है।(वासुकि पु./490-497)

सगुणोपासना में तीर्थों के सेवन के अलावा स्तोत्रों का भी काफी महत्त्व बतलाया गया है। कल्कि पुराण में भगवान् शिव के प्रति कल्कि द्वारा किये गये स्तोत्र(कल्कि पु. 1/3/14-20) का फल बताते हुए भगवान् शिव कहते हैं कि जो मनुष्य इस स्तोत्र का पाठ करेगा वह लोक एवं परलोक दोनों जगह अपने स्वार्थ को पूरा कर लेगा। इसके श्रवण या पाठ से विद्यार्थी को विद्या, धर्मार्थी को धर्म तथा कामार्थी को काम प्राप्त होगा। जो पाठक इस स्तोत्र में रुचि रखते हों उन्हें उपरोक्त संदर्भ देखना चाहिये।

भगवान् शिव की उपासना में त्रिपुण्ड्र का विशेष महत्त्व बताया गया है। कल्कि पुराण में इसके महत्त्व पर संक्षेप में प्रकाश डाला गया है। इसमें कहा गया है कि द्विजों को मिट्टी, भस्म या चन्दन आदि से तिलक एवं त्रिपुण्ड्र धारण करना चाहिये। केश पर्यन्त खिंचा हुआ उज्ज्वल त्रिपुण्ड्र धर्म-कर्म का अंग है। पुण्ड्र एक अंगुल चौड़ा हो, ऐसे तीन पुण्ड्र एक साथ हों तो उसे त्रिपुण्ड्र कहते हैं। त्रिपुण्ड्र में ब्रह्मा, विष्णु और महादेवजी का वास रहता है। इसके दर्शन करने से पाप का नाश होता है। यहाँ भाव यह है कि कम से कम ब्राह्मण को अवश्य ही त्रिपुण्ड्र धारण करना चाहिये क्योंकि उसे धर्म का प्रतिनिधि माना जाता है।(कल्कि पु. 1/4/19-20)

मृद्भस्मचन्दनाद्यैस्तु धारयेत्तिलकं द्विजः।
भाले त्रिपुण्ड्रं कर्म्माङ्गं केशपर्य्यन्तमुज्ज्वलम्।।
पुण्ड्रमङ्गुलिमानन्तु त्रिपुण्ड्रं तत्त्रिधा कृतम्।
ब्रह्मविष्णुशिवावासं दर्शनात् पापनाशनम्।। (कल्कि पु. 1/4/19-20)

त्रिदेवों की एकता

हिन्दू धर्म एवं दर्शन में त्रिदेवों की अभिन्नता को स्वीकार किया गया है। सभी प्रमुख ग्रन्थों में इनकी एकता का सशक्त ढंग से प्रतिपादन हुआ है। यह प्रतिपादन इतना व्यापक एवं सर्वमान्य रहा है कि बाद के ग्रन्थों में इसकी पुनः याद दिलाने की आवश्यकता ही नहीं प्रतीत हुई। यही कारण है कि उपरोक्त ग्रन्थों में इन तीनों देवों की एकता का मात्र संकेत भर किया गया है। उदाहरण के लिये नरसिंह पुराण में एक स्थल पर कहा गया है कि परात्पर भगवान् विष्णु(परमतत्त्व) रजोगुण से युक्त होकर ब्रह्मारूप से सृष्टि करते नरसिंह आदि रूपों में क्रमशः सभी युगों में(कल्पान्ततक) सृष्टि की रक्षा करते हैं। तथा रुद्ररूप से जगत् का संहार करते हैं। विष्णुजी ब्रह्मा के रूप में सृष्टि करते तथा जगत् के पालनार्थ रामादि रूप धारण करते और अन्त में रुद्ररूप से विश्व का संहार करते हैं।

रजोगुणयुतो देवः स्वयमेव हरिः परः।
ब्रह्मरूपं समास्याय जगत्सृष्टौ प्रवर्तते।।
सृष्टं च पात्यनुयुगं यावत्कल्पविकल्पना।
नरसिंहादिरूपेण रुद्ररूपेण संहरेत्।।
ब्राह्मेण रूपेण सृजत्यनन्तो जगत्समस्तं परिपातुमिच्छन्।
रामादिरूपं स तु गृह्य पाति भूत्वाथ रुद्रः प्रकरोति नाशम्।।

(नरसिंह पु. 1/65-67)

यहाँ पर बतलाया गया है कि परब्रह्म विष्णु(न कि विष्णु देव) ही ब्रह्मादिरूप धारण कर जगत् की रचना, रक्षा तथा संहार का कार्य करता है। अर्थात् तीनों प्रमुख देव मूलतः एक ही हैं क्योंकि वे सब एक ही ब्रह्म की अभिव्यक्तियाँ हैं।

प्रमुख शास्त्रों में शिव एवं विष्णु में भेद देखनेवाले की दुर्गति बतायी गयी है। भेद देखनेवाले को घोर नरक की प्राप्ति होती है। वहाँ वे लम्बे समयतक यातना भोगते रहते हैं। कल्कि पुराण में भी इस दुर्गति की तरफ संकेत किया गया है। भक्त राजा शशिध्वज कल्कि भगवान् से युद्ध करने से पहले कहता है कि "आप विभु हैं, मैं आप पर दृढ़ प्रहार करूँगा। परन्तु प्रहार करने के समय जो मैं आपको दूसरा(अपने से अलग) समझूँ तो मुझको वह लोक प्राप्त हो, जो लोक शिव एवं विष्णु में भेद समझनेवाले को प्राप्त होता है।"

परबुद्धिर्यदि दृढं प्रहर्त्ता विभवे त्वयि।

शिवविष्णोर्भेदकृते लोकं यास्यामि संयुगे।। (कल्कि पु. 3/9/6)

इस संदर्भ में शशिध्वज अपनी अद्वैत भक्ति की निष्ठा की अडिगता की पुष्टि के लिये शपथ जैसी उक्ति का प्रयोग करते हुए कहता है कि मुझे वह गति प्राप्त हो जो शिव एवं विष्णु में भेददर्शी को प्राप्त होती है(अर्थात् मुझे दुर्गति या नरक की प्राप्ति हो)।

भावार्थ यह है कि शिव एवं विष्णु में भेद नहीं करना चाहिये। भेद करनेवाले को नरक या दुर्गति की प्राप्ति होती है।

एक स्थल पर कल्किजी भगवान् शिव की स्तुति में कहते हैं कि आप जगत् की सृष्टि ब्रह्मारूप से करते हैं तथा विष्णुरूप से धर्म एवं साधुओं की रक्षा करते हैं तथा प्रलय के समय लोकों का नाश करते हैं।

स्थितौ विष्णुः सर्व्वजिष्णुः सुरात्मा लोकान् साधून् धर्म्मसेतून् बिभर्ति।
ब्रह्माद्यांशे योऽभिमानी। गुणात्मा शब्दाद्यङ्गैस्तं परेशं नमामि।।
.....लोकनाशो यस्य क्रोधोद्धूतलोकोऽस्तमेति।

(कल्कि पु. 1/3/18, 16)

उपरोक्त उद्धरण का भाव यह है कि परमतत्त्व शिव ही ब्रह्मा, विष्णु तथा रुद्ररूप धारण कर सृष्टि का व्यापार चलाते हैं। अतः तीनों देव मूलतः एक ही हैं।

उपसंहार

कल्कि, वासुकि एवं नरसिंह ये तीनों ही उपपुराणों की श्रेणी में आते हैं। कल्कि पुराण का लगभग 20 प्रतिशत अंश प्राप्य है, जबकि वासुकि पुराण को किसी अन्य(अज्ञात) पुराण का अंश माना जाता है। कल्कि एवं नरसिंह वैष्णव उपपुराण हैं जिनमें भगवान् शिवसंबंधी प्रसंग अत्यल्प हैं। परन्तु जहाँ उनका प्रसंग आया है, उन्हें ही परम तत्त्व स्वीकार किया गया है। उनके सगुण एवं निर्गुण दोनों रूपों की झलक हमें इन पुराणों में प्राप्त होती है।

इन पुराणों में भगवान् शिव को संसार का स्वामी, सभी प्राणियों में विराजमान रहनेवाले, आदि देव, आनंद के धाम, योग के अधिपति, काम का नाश करनेवाले, काल, कर्म एवं स्वभावानुसार जगत् की सृष्टि करनेवाले, जगत् के पालनार्थ विष्णुरूप धारण करनेवाले, परम देवता, संसार का प्रलय करनेवाले, पंचवदन, त्रिलोचन, गंगाधारी, जटा-जूट से विभूषित, खंग, शूल आदि आयुधों को धारण करनेवाले, महादेव, आशुतोष, महेश्वर, सर्वज्ञ, कैलासवासी, देवताओं द्वारा पूजित, अज्ञान का भेदन करनेवाले, त्रैलोक्येश, सत्य एवं धर्म स्वरूप, देवताओं के आचार्य, परमात्मा, योगियों के ईश्वर, अर्द्धचन्द्र को धारण करनेवाले, कण्ठ में वासुकि को धारण करनेवाले तथा भूत-भावन आदि कहा गया है।

भगवान् शिव शीघ्र प्रसन्न होनेवाले, मुक्तिदाता, कामनाओं या वासनाओं का नाश करनेवाले,

साधु पुरुषों की रक्षा करनेवाले, अज्ञान का नाश करनेवाले, सत्य एवं धर्मस्वरूप तथा देव-दानवों आदि द्वारा पूजित हैं। कल्कि, वासुकि, राम, इन्द्र तथा विद्रुम जैसे महान् अवतारी पुरुषों तथा देवों ने भगवान् शिव की उपासना से मनोवांछित फल पाया है।

भगवान् शिव की उपरोक्त विशेषताओं को ध्यान में रखने पर शिवभक्ति का आकर्षण अधिक बढ़ जाता है। फलतः भगवान् शिव की उपासना को अधिक महत्त्व दिया जाना चाहिये।

इन पुराणों में केदार, काशी, वासुकि कुण्ड, गुह्येश्वर, स्थानेश्वर, आदि तीर्थों का वर्णन मिलता है। यहाँ स्नान, शिवलिंगोपासना, ध्यान, जप, होम, तर्पण आदि का अनन्त फल बताया गया है। इन सबके प्रभाव से व्यक्ति अपने पूर्वजों का उद्धार कर स्वयं स्वर्ग एवं रुद्रलोक में चिरकालतक निवास कर शिवसायुज्यता को प्राप्त कर लेता है।

कल्कि पुराण में कल्किकृत शिवसंबंधी स्तोत्र का उल्लेख है। जिसके पाठ से विद्यार्थी को विद्या, धर्मार्थी को धर्म तथा कामार्थी को काम की प्राप्ति होती है।

कल्कि एवं नरसिंह पुराणों में त्रिदेवों की एकता संबंधी सूत्र पाये जाते हैं। शिव एवं विष्णु में भेद करनेवाले की दुर्गति होती है-इसका भी संकेत कल्कि पुराण में पाया जाता है।

(उपरोक्त लेख पुराणों की निम्नलिखित प्रतियों पर आधारित है-

(1.) कल्किपुराणम्; टीकाकार, बलदेवप्रसाद मिश्र, नाग पब्लिशर्स, दिल्ली, 1986. (2.) श्रीवासुकिपुराणम्; संपादक, अनन्तराम शास्त्री, नाग पब्लिशर्स, दिल्ली, 1981. (3.) श्रीनरसिंहपुराणम्; संपादक एवं(अंग्रेजी में) अनुवादक, सिद्धेश्वर जेना, नाग पब्लिशर्स, दिल्ली, 1987)

S S S S S S S S

आत्मबुद्धिः सुखकरी गुरुबुद्धिः विशेषतः।
परबुद्धिर्विनाशाय स्त्रीबुद्धिः पलयङ्करी।।

(नार. महापु. पूर्वखण्ड 11/94)

अपनी बुद्धि का सदुपयोग सुख देनेवाला होता है परन्तु गुरु की बुद्धि या सलाह विशेष रूपसे सुखदायी होती है। दूसरे व्यक्ति की बुद्धि पर चलने से विनाश होता है(क्योंकि वह राग-द्वेषयुक्त होती है)। जबकि स्त्री की बुद्धि(जो वास्तव में बुद्धि न होकर भावावेग है) का अनुकरण प्रलयंकर अर्थात् महाविनाशक होता है।